रसूलुल्लाह
(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)
की जंगें

मानवता के लिए एक उदाहरण

लेखक
बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

हिन्दी अनुवाद
नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी

सत्यमार्ग प्रकाशन
लखनऊ

सभी अधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण
(२०१७)

पुस्तक : रसूलुल्लाह (सल्ल०) की जंगें
(मानवता के लिए एक उदाहरण)
लेखक : बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी
अनुवादक : नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी
कम्पोज़िंग : मोहम्मद सैफ़
पृष्ठ : 62
मूल्य : Rs. 40/-

मुद्रकः
मुहम्मद नफ़ीस ख़ाँ नदवी

प्रकाशकः
सत्यमार्ग प्रकाशन
नदवा रोड, डालीगंज, लखनऊ

विषय–सूची

जंगों का इतिहास 5

करूणा सागर (मुहम्मद (स0अ0) का अभ्यूदय और मक्का के बहुदेववादियों की दुश्मनी 7

हिजरते मदीना 8

औस व ख़ज़रज व मदीना के यहूद 9

अन्सार व मुहाजिरीन में बंधुत्व 11

यहूदियों से समझौता एक शांतिमय समाज की स्थापना ...11

बदर युद्ध से पूर्व 13

बदर युद्ध का पसमंज़र 16

बदर युद्ध की कुछ घटनाएं 20

युद्ध बन्दियों के साथ व्यवहार 23

उहद युद्ध का पसमंज़र 24

मदीने पर हमले की सूचना और हज़रत मुहम्मद (स0अ0).....26

युद्ध का आरम्भ 26

बहुदेववादियों की बर्बरता 28

यहूदियों की संधि अवहेलना 28

बनू क़ैनक़ाअ 31
बनू नज़ीर 32
ख़न्दक़ युद्ध 34
बनू कुरैज़ा 36
हुदैबिया संधि 37
ख़ैबर के यहूदी 42
रूमियों से युद्ध 43
कुरैश का संधि उल्लंघन और मक्का विजय.....45
अपने दुश्मनों के साथ व्यवहार 48
अन्तिम असफल प्रयास 52
ग़ज़वात पर एक दृष्टि 54
संसार का विधान 56
आप (स0अ0) के दिशा–निर्देश 58
अन्तिम बात 61

بسم الله الرحمن الرحيم

रसूलुल्लाह (स०अ०) की जंगे

मानवता के लिए एक उदाहरण

जंगों का इतिहास

जंगो के वैश्विक इतिहास का यदि अध्ययन किया जाए तो वह मानवता के माथे पर एक कलंक है। पूर्व से लेकर आज तक जो जंगी कार्यवाइयां हुहई हैं, उनमें इनसानी ख़ून के अतिरिक्त कुछ नज़र नहीं आता। एक विजेता जब किसी देश पर आक्रमण करता है तो ख़ून की नदियां बहाता है। वह गृह युद्ध या औस व ख़ज़रज का दीर्घ कालीन जंगी सिलसिला जो चालिस वर्ष तक चलता रहा और दुनिया उसे "हर्बे बुआस" के नाम से जानती है। इधन निकटवर्ती सदियों के सभ्य समुदायों का भी इतिहास देख लिया जाए। स्पेन के फ़ाइड ने पांच लाख मुसलमानों को ज़िन्दा जला दिया। फ्रांस की क्रान्ति जिस पर लोकतन्त्र की मुहर लगी हुई है, उसमें छब्बीस लाख इनसानों का ख़ून किया गया। रूस में साम्यवादी क्रान्ति ने एक करोड़ से अधिक इनसानों की जान ली फिर 1914 ई0 के भयावह

विश्वयुद्ध में यूरोपीय देशों ने जर्मनी से अपने इलाक़ों की आज़ादी के नाम पर हत्या व विनाश का जो बाज़ार गर्म किया उसके नतीजे में तिहत्तर लाख तीन हज़ार से अधिक लोग उसकी भेंट चढ़े। फिर दूसरे विश्वयुद्ध में जो 1938ई0 से 1942ई0 तक जारी रहा, एक करोड़ से अधिक लोग मारे गए और एक ही समय में अमरीका ने जापान के दो शहरों को एटम बम गिराकर तबाह कर दिया।

भारतीय इतिहासकार अमरेश मिश्रा अपनी ताज़ा अन्वेषणात्मक पुस्तक में ऐतिहासिक साक्ष्यों, दस्तावेज़ों और सरकारी आंकड़ों के आधार पर लिखता हैः

"अंग्रज़ों ने 1857 में दस मिलियन (एक करोड़) भारतीयों को मौत के घाट उतार दिया, केवल इसलिए कि उन्होंने बिट्रिश साम्राज्य के विरुद्ध आंदोलन शुरू किया था।"

1955 ई0 में अमरीका ने कोरिया पर क़ब्ज़ा करने के लिए जंग की, जिसमें पन्द्रह लाख लोग मारे गए।

यह बहुत मोटे–मोटे फीगर्स हैं, यदि इसमें विस्तार से जाने का प्रयास किया जाए तो लगेगा कि शायद इनसान इनसान को मारने ही के लिए पैदा किया गया है। अभी कुछ वर्षों में इराक़, अफ़ग़ानिस्तान, सीरिया आदि में जिस प्रकार निःसंकोच लाखों इनसानों का ख़ून बहाया गया, यह दुनिया की जंगों का भयावह और डरावना नक़्शा है जिसके चिन्ह बहुत उभरे हुए दिखाई पड़ते हैं। अन्यथा दबे चिन्हों

के साथ नक़्शों में जो कुछ उभर रहा है, वह इस हद तक ख़तरनाक लगता है कि शायद दुनिया अपनी अन्तिम सांसे ले रही है। मानवता अब दम तोड़ देगी या तब।

इस अतिसंक्षिप्त भूमिका के बाद चिन्तन करने की आवश्यकता है कि इस मैदान में विश्वकृपा अन्तिम संदेष्टा हज़रत मुहम्मद (स0अ0) की शिक्षा–दीक्षा क्या है और आपने इनसानी समाज के सामने क्या उदाहरण प्रस्तुत किया है।

करुणा सागर मुहम्मद (स०अ०) का अभ्यूदय और मक्का के बहुदेववादियों की दुश्मनी

अल्लाह ने आप (स0अ0) को जगत के लिए कृपा बनाकर भेजा है। संसार जो विनाश की घाटी में जी रहा था आप (स0अ0) ने उसे संभाला और अपने व्यक्तित्व से पूर्ण मानव का ऐसा उदाहरण पेश किया कि उससे बढ़िया मिसाल दुनिया की नज़रों ने नहीं देखा था। आप (स0अ0) ने एक अल्लाह की ओर बुलाया। बहुदेववाद के अंधियारे से निकालकर एकेश्वरवाद का नूर प्रदान किया। एक ऐसी जीवनव्यवस्था संसार को दिया जो इनसानों के लिए जीवन का संदेश था और उससे मानवता को वह अमृत मिला जिससे उसकी मुर्दा रगों में ख़ून दौड़ने लगा। लेकिन उस समय नकार व बहुदेववाद में डूबे हुए समुदाय जिनके अपने निजी और जाति स्वार्थ उससे जुड़े हुए थे उन्होंने शत्रुता का बेड़ा उठाया। हज़रत मुहम्मद (स0अ0) प्रेम से समझाते

रहे। धीरे–धीरे लोग इस रहमत के साये में आते रहे, लेकिन वह स्वार्थी लोग जो सच्चाई पर चिन्तन–मनन नहीं चाहते थे, उन मानने वालों के शत्रु बन गए। उन्होंने अपनी दुश्मनी निकालने के लिए कोई कसर नहीं छोड़ी। आपके मानने वालों का जीना दूभर कर दिया। उनको मारते, अपमानित करते, तपते रेगिस्तान में लिटाकर सीने पर भारी पत्थर रख देते। हज़रत सुमैया (रज़ि0) एक बूढ़ी महिला थीं। अबू जहल ने उन पर ऐसा नेज़ा मारा कि वे शहीद हो गयीं। आप (स0अ0) के रास्ते में कांटे बिछाते आपको न जाने क्या–क्या कहतीं, यहां तक कि आप (स0अ0) ने अपने मानने वालों को देश त्याग की आज्ञा दे दी। बहुत से लोग हब्शा (इथोपिया) हिजरत कर गए। यह प्रतिशोध की भावना रखने वाले वहां भी पहुंचे और हब्शा के बादशाह नज्जाशी को आप (स0अ0) के विरुद्ध भड़काने की कोशिशें की, मग रवह सच को जानने–बूझने वाला था, इसलिए यह स बचेष्ठाएं बेकार गयीं।

हिजरत–ए–मदीना

इस पूरी अवधि में न किसी मुसलमान ने बदला लिया, न किसी ने हाथ उठाया, कि यही रब का हुक्म था।

﴿كُفُّواْ أَيْدِيَكُمْ وَأَقِيمُواْ الصَّلاَةَ﴾

"हाथों को रोके रखो और नमाज़ क़ायम करो।"

(सूरह निसाः 77)

बड़ी क़ुर्बानियों की ताकीद की जा रही, अतंतः आप (स0अ0) को भी हिजरत की इजाज़त मिल गयी। यही हिजरत देश त्याग की वह रात थी जिसमें मक्का के बहुदेववादियों ने आप (स0अ0) को शहीद करने का षडयंत्र रचा था और आप (स0अ0) के घर का घेराव किया था। आप (स0अ0) ने हज़रत अली (रज़ि0) को अपने बिस्तर पर लिटाया ताकि वे अमानते वापस करें जो बहुदेववादी इन हज़ार दुश्मनियों के बाद भी आप ही के पास रखवाते थे। उनके नज़दीक आप (स0अ0) से बढ़कर कोई "अमीन" न था। अल्लाह के आदेशानुसार आप (स0अ0) सूरह यासीन पढ़ते हुए उनकी आंखों में धूल झोकते निकल गए।

औस व ख़ज़रज और मदीना के यहूदी

दो बड़े क़बीले औस व ख़ज़रज के नाम से मदीने में आबाद थे। उनके अतिरिक्त यहूदियों के तीन बड़े क़बीले थे। बनू नज़ीर, बनू क़ुरैज़ा और बनू कैनक़ाअ। यहूदी क़बीले धनी भी थे और चालाक भी। व्यापार पर उनका पूरा क़ब्ज़ा था। हथियार भी बनाकर बेचते थे। औस व खज़रज के लोग अक्सर यहूदी साहूकारों से बड़े–बड़े कर्ज़ लेते और उस पर वे ब्याज वसूल करते। इस प्रकार वे अरब, इन यहूदियों के बोझ तले दबे भी रहते थे। इसके अलावा इन यहूदियों ने अरब क़बीलों से दिखावे की मित्रता भी कर रखी थी। बनू नज़ीर के मैत्रीय संबंध

खज़रज से और बनू कुरैज़ा के औस क़बीले से क़ायम थे और अन्दर ही अन्दर वे दोनों को लड़वाते रहते थे ताकि वे कभी सर न उठा सकें।

यहूदी औस व खज़रज को यह ताना देते रहते थे कि शीघ्र ही एक नबी (संदेष्टा) का अभियोदय होने वाला है, हम उसके साथ मिलकर तुम सबकी छुट्टी कर देंगे। तुम इरम व आद की तरह मारे जाओगे। इस प्रकार उनके ज़हनों में भी पैग़म्बर (संदेष्टा) के अभ्यूदय की कल्पना विराजमान हो चुकी थी। उसके बाद जब वे हज करने मक्का आए तो उन्होंने आप (स0अ0) के अभ्यूदय की चर्चा सुनी। उन्होंने जांचा–बूझा और बोले कि हो न हो यह वही नबी हैं, जिनका ज़िक्र हमसे अब तक यहूदी करते रहे हैं, बस हमें देर नहीं करनी चाहिये ताकि यहूदी हमसे बाज़ी मार न ले ं। धीरे–धीरे उनमें इस्लाम फैलने लगा तो आप (स0अ0) हज़रत मुसअब बिन उमैर (रज़ि0) को शिक्षक बनाकर भेजा और मदीने के हर घर में इस्लाम दाख़िल हो गया।

622 ई0 में एक बड़ा काफ़िला हज के मौसम में आया और उन्होंने आप (स0अ0) के निवेदन किया कि आप मदीने चलें, हम आपका साथ देंगे। हज़रत अब्बास (रज़ि0) उस समय मौजूद थे, उन्होंने कहा कि तुम सोच–समझकर बात कहो। उन्होंने कहा, हम सबकुछ सोच कर आए हैं, हम तलवारों की गोद में पले हैं, हमें मालूम है कि हम किस

चीज़ पर बैत (भक्ति प्रतिज्ञा) ले रहे हैं और यह भी जानते हैं कि आपका अभ्यूदय (बिअसत) अरब व ग़ैर अरब से युद्ध करने के समय है। हज़रत अब्बास बिन उबादा (रज़ि0) ने कहा कि आज्ञा हो तो हम कल ही मक्का वालों को अपनी तलवारों का जौहर दिखा दें। आप (स0अ0) ने कहा कि मुझे युद्ध करने की आज्ञा नहीं है।

अंसार और मुहाजिरीन में बंधुत्व

इस्लाम लाने के बाद औस व खज़रज में आपसी शत्रुता तो समाप्त हो चुकी थी। आप (स0अ0) जब मदीने आए तो सबसे पहले आप (स0अ0) ने अंसार व मुहाजिरीन में भाईचारा कराया। औस व खज़रज ने जिस प्रकार बढ़–चढ़ कर मुहाजिरीन (देश त्यागियों) की सहायता की, उसका उदाहरण इतिहास में मिलना मुश्किल है। उसका परिणाम यह हुआ कि आज दुनिया उनको "अंसार" (मददगार) के नाम से जानती है। दोनों क़बीले ऐसे घुल–मिल गए कि आप उनकी क़बाइली पहचान से भी कम ही लोग अवगत हैं।

यहूदियों से संधि–एक शांतिमय समाज की स्थापना का प्रयास

मदीने आने के बाद जबकि एक बड़ी ताक़त आप (स0अ0) को हासिल हो चुकी थी। आप (स0अ0) चाहते तो यहूदियों को उसी समय वहां से बाहर कर दिया जाता,

मगर आप (स0अ0) ने पूरा जायज़ा लेकर उनको बुलवाया और मुसलमानों की ओर से उनके साथ समझौता किया, जो "मीसाक़–ए–मदीना" के नाम से प्रसिद्ध है। इस संधि के द्वारा आप (स0अ0) ने मदीने की पूरी आबादी को एकजुट करने की कोशिश की, जिसमें यहूदियों और बहुदेववादियों को भी शामिल किया ताकि एक बेहतर समाज की स्थापना हो सके और अमन–शांति का वातावरण बना रहे।

संधि की धाराएं नीचे लिखी जाती हैं:

1– यहूद और मुसलमान आपस में मैत्रीय संबंध क़ायम रखेंगे।

2– यदि मदीने पर हमला होगा तो सब मिलकर मुक़ाबला करेंगे।

3– यदि किसी से लड़ाई होगी तो एक–दूसरे की सहायता करेंगे।

4– कोई पक्ष कुरैश को शरण न देगा।

5– मदीनावासी सबके सब शांति के साथ रहेंगे, कोई किसी पर अत्याचार न करेगा।[1]

यह संधि किसी भी मिश्रित आबादी के लिए निशाने राह है। जहां मुसलमान भी हों और दूसरों की भी आबादी हो तथा वहां मुसलमान बहुसंख्यक हों। आप (स0अ0) का यह समझौता जो "मीसाक़–ए–मदीना" के नाम से प्रसिद्ध है,

---

1. सीरत इब्ने हिशाम: 501–502

एक कार्ययोजना है, और यह स्पष्ट है कि जहां मुसलमान अल्पसंख्यक हों, वहां मक्का की कार्यशैली उनके लिए उदाहरण हैं और इसके साथ–साथ यह संधि भी ऐसी स्थिति के लिए रोशनी देता है।

बदर युद्ध से पूर्व

यह सुख–शांति न बहुदेववादियों को भाया और न मदीने के यहूदियों को। यहूद ने विवशतापूर्वक संधि तो कर ली, लेकिन एक दिन भी चैन से न बैठे। दूसरी ओर मक्का के बहुदेववादियों की शरारतें भी जारी रहीं। मक्का में तो उन्होंने कोई कसर नहीं छोड़ी थी, बल्कि मदीने वालों ने जब आप (स0अ0) से अक़्बा में बैअत (भक्ति प्रतिज्ञा) की तो मक्का के बहुदेववादियों ने मदीने से आने वाले उन अतिथियों को भी सताया। हज़रत साद बिन मआज़ (रज़ि0) जो औस क़बीले के सरदार थे, एक बार उमरा करने के लिए मक्का पहुंचे तो अबू जहल ने उनके साथ दुर्व्यवहार किया और बोला कि यदि तुम अबू सफ़वान (उमैया बिन ख़ल्फ़) के मेहमान न होते तो यहां से ज़िन्दा सलामत जाने न पाते।[1]

हज़रत मुहम्मद (स0अ0) के देश त्याग के बाद मक्का के बहुदेववादी बजाय चुप रहने के और ताक़त के साथ मुसलमानों को कुचलने की योजनाएं बनाने लगे और इसके

1. सही बुख़ारीः 390

लिए उन्होंने जंगी तैयारियां भी शुरू कर दीं। अब्दुल्लाह बिन सलूल औस व खज़रज के इस्लाम लाने से पहले उनके लिए बड़ा आदरणीय था, और दोनों क़बीलों ने उसको अपना सरदार मान लिया था और शीघ्र ही उसकी ताजपोशी होने वाली थी कि अचानक दुनिया बदल गई [1] और दोनों क़बीले मुसलमान हो गए। इब्ने सलूल ने भी दिखावे के लिए इस्लाम कुबूल कर लिया था यद्यपि उसके अन्दर आग सुलग रही थी। मक्का के बहुदेववादियों ने उसको हज़रत मुहम्मद (स0अ0) के देश त्याग के बाद ही पत्र लिखा कि:

"तुमने हमारे आदमी को शरण दी है, हम क़सम खाकर कहते हैं कि तुम उनसे युद्ध करो या मदीने से निकाल दो, अन्यथा हम अपने गिरोह के साथ आएंगे और तुम्हें क़त्ल करेंगे, और तुम्हारी महिलाओं को अपने काम में लाऐंगे।" [2]

हज़रत मुहम्मद (स0अ0) को जब ज्ञात हुआ तो उसके पास गए और कहा कि क्या तुम अपने बेटों और भाइयों से लड़ोगे? [3]

चूंकि औस व खज़रज के अधिकतर लोग मुसलमान हो चुके थे इसलिए यह बात उनकी समझ में आ गयी और वह

---

1. बुख़ारी
2. अबू दाऊदः 3006
3. अबू दाऊद

कुरैश की बात न मान सका, जबकि यह उसके मन की आकांक्षा थी।

आप (स0अ0) के सामने यह पूरी परिस्थितयां थीं। मक्का के बहुदेववादियों की शरारतें आप (स0अ0) के सामने आती रहती थीं। आप (स0अ0) जहां से भी ख़तरे का आभास पाते तो कभी स्वयं सहाबा (सहचरों) की टुकड़ी के साथ उनके दमन के लिए जाते और कभी केवल सहाबा की टुकड़ी भेज देते ताकि मक्का वाले भी यह महसूस कर लें कि परिस्थितयां वह नहीं हैं जो मक्के में थीं। हज़रत मुहम्मद (स0अ0) जिस मुहिम में स्वयं शामिल रहते उसको "ग़ज़वा" कहते हैं और जिस मुहिम में आप शामिल न होते केवल सहाबा को भेज देते उसको "सरया" कहते हैं। सामान्यतः "ग़ज़वात" और "सरया" के नाम से जिन मुहिमों का ज़िक्र मिलता है, वे यही कार्यवाहियां थीं। जिनका उद्देश्य यह था कि बहुदेववादी अपने जंगी संकल्प को छोड़ दें और परिस्थिति शांतिमय बनी रहे लेकिन आप (स0अ0) को आभास हो गया था कि मक्कावासी किसी भी स्थिति में युद्ध थोपना चाहते हैं।

बदर—युद्ध का पसमंज़र

बदर युद्ध इस्लाम का प्रथम युद्ध है, जो सत्य और असत्य के बीच निर्णायक था। हज़रत मौलाना सैयद अबुल हसन अली नदवी रह0 कहते हैं कि:

"उसके बाद से आज तक मुसलमानों को जितनी फ़तेह और सफलताएं प्राप्त हुईं और उनकी जितनी हुकूमतें और सलतनते कायम हुईं, वह सब उसी फ़तह–ए–मुबीन (स्पष्ट विजय) की अमानत हैं जो बदर के रणक्षेत्र में उस मुट्ठी भर टुकड़ी को प्राप्त हुई थी। इसीलिए अल्लाह ने इसको यौमुल फ़ुरक़ान (निर्णय का दिन) घोषित किया है।"[1]

﴿إِن كُنتُمْ آمَنتُمْ بِاللَّهِ وَمَا أَنزَلْنَا عَلَى عَبْدِنَا
يَوْمَ الْفُرْقَانِ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعَانِ﴾

"यदि तुम अल्लाह पर और उसकी चीज़ पर यक़ीन रखते हो, जो हमने अपने बन्दे पर निर्णय के दिन उतारी थी, जिस दिन दो फ़ौजें आमने–सामने हुईं थीं।"

(सूरह अनफ़ातः 41)

उपर्युक्त में यह बात गुज़र चुकी है कि मक्का के बहुदेववादी निरन्तर इस तैयारी में थे कि मदीना पर आक्रमण करके इस्लाम का उन्मूलन कर दें। इस प्रकार की सूचनाएं आती रहती थीं कि मुसलमानों को बहुत चौकन्ना होकर रहना पड़ता था। फ़तेहुल बारी नामक पुस्तक में है कि:

---

1. नबी–ए–रहमतः 213

"अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (स0अ0) जब मदीने में आते तो रातों को जागते थे।"[1]

बुख़ारी में है कि आप (स0अ0) ने एक बार कहा कि आज कोई अच्छा आदमी पहरा दे। अतः हज़रत साद बिन वक्कास (रज़ि0) ने हथियार लगाकर रातभर पहरा दिया तब आप (स0अ0) ने आराम किया।[2]

एक अन्य स्थान पर स्पष्ट रूप से बयान है, जिनके वाक्य यह हैं:

"हज़रत उबयि बिन काब (रज़ि0) कहते हैं कि जब हज़रत मुहम्मद (स0अ0) और सहाबा मदीने आए और अंसार ने उनको पनाह दी तो समस्त अरब एक साथ उनसे लड़ने पर उतारू हो गए। सहाबा (रज़ि0) हथियार बांधकर रात गुज़ारते और इसी हाल में सुबह करते।"[3]

इन परिस्थितियों में एक बेहतर उपाय यह था कि कुरैश जब शाम (सीरिया) व्यापार हेतु जाएं तो उनको रोका ताकि वे संधि पर विवश हो जाएं। हज़रत साद बिन मुआज़ (रज़ि0) को जब अबू जहल ने बुरा–भला कहा तो उन्होंने

---

1. फ़तेहुलबारी: 2729
2. बुख़ारी: 2880
3. मुस्तदरक हाकिम: 3512

यह धमकी दी थी कि यदि तुमने हमको हज से रोका तो हम तुम्हारा रास्ता बंद कर देंगे।[1]

हज़रत मुहम्मद (स0अ0) को मालूम हुआ कि अबू सुफ़ियान के नेतृत्व में कुरैश का एक बड़ा काफ़िला शाम (सीरिया) को रवाना हुआ है। यह काफ़िला इस साज़ो सामान के साथ रवाना हुआ था कि इब्ने साद (रज़ि0) ने अबू सुफ़ियान से यह अल्फ़ाज़ नक़ल किए हैं:

"मक्का में क़ुरैश क़बीले के मर्दों, औरतों के पास जो कुछ भी था, वह हमारे साथ रवाना कर दिया गया था।"[2]

हमारे इतिहासकारों को कारण व परिणाम की जिज्ञासा नहीं हुई, इसलिए उन्होंने इस घटना को केवल एक घटनास्वरूप लिख दिया है, लेकिन उनको आभास नहीं कि मक्का को समस्त पूंजी उगल देने की क्या आवश्यकता थी?[3]

यह वास्तव में युद्ध सामग्री उपलब्ध करने का प्रबन्ध था और ख़तरे की घंटी, जिसको सबने महसूस किया।

हज़रत मुहम्मद (स0अ0) ने इस काफ़िले को रोकने के लिए सहाबा की एक छोटी टुकड़ी के साथ निकलने का इरादा किया, जिनकी संख्यां तीन सौ तेरह नक़ल की जाती है। इधर कुरैश को जब हज़रत मुहम्मद (स0अ0) के इस

---

1. बुख़ारीः 3636
2. मगाज़ीः 41
3. सीरतुन्नबी, भागः 2, पेजः 255

इरादे की सूचना मिली तो उन्होंने एक विराट सेना तैयार की जो पूरे रोष–क्रोध के साथ मदीना को रवाना हुई। हज़रत मुहम्मद (स0अ0) को जब सेना की सूचना मिली तो आपने सहाबा को समस्त परिस्थितयों से अवगत कराया और परामर्श चाहा। हज़रत अबूबक्र (रज़ि0) और दूसरे मुहाजिरीन (देशवासियों) ने कुछ ओजस्वी भाषण दिया लेकिन आपका रुख़ अंसार की ओर था, जिन्होंने बैअत (भक्ति प्रतिज्ञा) के समय यह वचन दिया था कि जब शत्रु मदीने पर आक्रमण करेंगे तो वे तलवार उठाएंगे। अंसार इसको भांप गए तो हज़रत साद बिन मआज़ ने कहा कि:

"ऐ अल्लाह के रसूल (स0अ0) शायद आपको यह विचार आ रहा है कि अंसार ने केवल अपने वतन और अपनी सरज़मीन में आपकी सहायता का ज़िम्मा लिया है। मैं अंसार की ओर से यह बात कह रहा हूं कि आप जहां चाहे रवाना हों, जिससे चाहे संबंध रखें और जिससे चाहें समाप्त कर लें, हमारे धन–दौलत में जितना चाहे लें सिर्फ़ ले और हमको जितना पसंद हो अता करें, इसलिए कि आप जो कुछ लेंगे वह हमें उससे कहीं अधिक प्रिय होगा जो आप छोड़ेंगे। आप कोई आदेश देंगे तो हमारी राय आपके आदेश के अधीन होगी। ख़ुदा की क़सम यदि आप चलना शुरू करें यहां तक कि "बर्क़ ग़मदान" तक पहुंच जाएं तब भी हम आपके साथ चलते रहेंगे, और ख़ुदा की क़सम यदि

आप इस समुद्र में प्रवेश कर जाएंगे तो हम भी आपके साथ इसमें कूद जाएंगे।"

हज़रत मिक़दाद (रज़ि0) ने कहा, हम आपसे ऐसा न कहेंगे जैसा मूसा अलैहिस्सलाम की क़ौम ने कहा था:

﴿فَاذْهَبْ أَنتَ وَرَبُّكَ فَقَاتِلا إِنَّا هَاهُنَا قَاعِدُونَ﴾

"जाओ तुम और तुम्हारा रब दोनों मिलकर युद्ध करो, हम तो यहां बैठे रहेंगे।" (सूरह अलमाइदा: 24)

हम तो आपके दायें लड़ेंगे और बाएं लड़ेंगे, आपके सामने आकर लड़ेंगे और आपके पीछे लड़ेंगे। जब आप (स0अ0) ने यह बातें सुनी तो पवित्र चेहरा ख़ुशी से दमकने लगा और आपको अपने सहाबा (सहचरों) की ज़बान से इन शब्दों को सुनकर बड़ी प्रसन्नता हुई। आप (स0अ0) ने कहा, "चलो और ख़ुशख़बरी हासिल करो।"[1]

बदर युद्ध की कुछ घटनाएं

यह सबसे पहला युद्ध था जो मुसलमानों के सर थोपा गया।

"क़ुरैश चूंकि पहले पहुंच गए थे, उन्होंने उचित स्थानों पर क़ब्ज़ा कर लिया, इसके उलट मुसलमानों की ओर तालाब या कुआं तक न था, ज़मीन ऐसी रेतीली थी कि ऊंटो के पैर रेती में धंस–धंस जाते थे। हज़रत हब्बाब बिन

1. नबी–ए–रहमत: 214–215

मुन्ज़र (रज़ि0) ने हज़रत मुहम्मद (स0अ0) की सेवा में आकर पूछा कि जिस स्थान का चयन किया गया, वह्य (इलाही वाणी) के अनुसार है या फ़ौजी विचार है? आप (स0अ0) ने कहा वह्य नहीं है।"

हज़रत हब्बाज रज़ि0 ने कहा, बेहतर होगा कि आगे बढ़कर तालाब पर क़ब्ज़ा कर लिया । और आस–पास के कुएं बेकार कर दिये जाएं।[1] आप (स0अ0) ने यह राय पसंद की और इसी पर अमल किया गया। अल्लाह का करना कि बारिश हो गयी जिससे धूल जम गयी और थोड़ी–थोड़ी पर पानी रोक कर छोटे–छोटे हौज़ बना लिए गए कि वुज़ू और नहाने के काम आएं। इस प्राकृतिक एहसान को अल्लाह ने पवित्र कुरआन में भी वर्णित किया है:

﴿وَيُنَزِّلُ عَلَيْكُم مِّن السَّمَاء مَاء لِّيُطَهِّرَكُم بِهِ﴾

"और जब ख़ुदा ने आसमान से पानी बरसाया कि तुमको पाक करें।" (सूरह अंफ़ाल: 11)

पानी पर यद्यपि क़ब्ज़ा कर लिया गया लेकिन साक़िये कौसर हज़रत मुहम्मद (स0अ0) ने दुश्मनों को भी पानी लेने की आम इजाज़त दे रखी थी।[2] यह रात का समय था तमाम सहाबा ने कमर खोल–खोल कर रात भर आराम

1. इब्ने हिशाम: 1/378
2. इब्ने हिशाम: 2/16

किया,[1] लेकिन हज़रत मुहम्मद (स0अ0) सुबह तक बेदार दुआ में लगे। सुबह हुई तो लोगों को नमाज़ के लिए आवाज़ दी, नमाज़ बाद जिहाद पर व्याख्यान दिया।

मैदान के किनारे हज़रत मुहम्मद (स0अ0) के लिए एक छप्पर तैयार कर दिया गया था। आप (स0अ0) ने युद्ध हेतु सेना को पंक्तिबद्ध किया, फिर छप्पर में लौटे और देर तक दुआ की। अल्लाह के सामने रोते–गिड़गिड़ाते रहे, बेखुदी में चादर कांधो से गिर जाती। उस समय आपकी पवित्र ज़बान से यह अल्फ़ाज़ अदा हुएः

"ऐ अल्लाह! यदि यह मुट्ठी भर लोग आज हलाक हो गए तो धरती पर तेरी इबादत करने वाला कोई न रहेगा।"

आप (स0अ0) ने इस दशा को देखकर हज़रत अबूबक्र (रज़ि0) ने आपको सांत्वना दी और अल्लाह की ओर से फ़तेह की खुशख़बरी मिली।

﴿سَيُهْزَمُ الْجَمْعُ وَيُوَلُّونَ الدُّبُرَ﴾

"शीघ्र ही सबको पराजय मिलेगी और पीठ दे–दे कर भागेंगे।"

(सूरह अलक़मरः 45)

यह पढ़ते हुए आप (स0अ0) रणक्षेत्र में आए।

युद्ध का आरम्भ भी बहुदेववादियों की ओर से हुआ। सबसे पहले वही ललकार कर मैदान में आगे बढ़े। आप

---

1. सीरतुन्नबीः 1/227–228

(स0अ0) ने मुक़ाबले का आदेश दिया। उसके विस्तार में जाने का यह अवसर नहीं है। इतिहास की पुस्तकें उसका विषय हैं।

युद्ध की समाप्ति पर ज्ञात हुआ कि मुसलमानों में केवल चौदह लोगों ने शहादत पायी। लेकिन दूसरी ओर कुरैश की असल ताक़त टूट गयी, उनके सरदार चुन–चुन कर मारे गए और सत्तर के क़रीब बन्दी बने।

युद्धबन्दियों के साथ व्यवहार

युद्धबन्दी दो–दो चार सहाबा (सहचरों) में बांट दिये गए और आदेश हुआ कि आराम के साथ रखे जाएं। सहाबा ने उनके साथ यह बर्ताव किया कि उनको खाना खिलाते थे और स्वयं खजूर खाकर रह जाते थे। उनके बन्दियों में अबू अज़ीज़ भी थे, जो हज़रत मुसअब बिन उमैर (रज़ि0) के भाई थे। उनका बयान है कि मुझको जिन अंसारी ने अपने घर में क़ैद कर रखा था, जब सुबह या शाम खाना लाते तो रोटी मेरे सामने रख देते और खुद खजूरे उठा लेते। मुझको शर्म आती और मैं रोटी उनके हाथ में दे देता लेकिन वे मुझ ही को वापस दे देते और यह इस कारण था कि हुज़ूर (स0अ0) ने ताकीद की थी कि बन्दियों के साथ अच्छा व्यवहार किया जाए।[1]

---

1. तबरीः 3/1338

क़ैदियों में एक व्यक्ति सुहैल बिन अम्र था, जो ओजस्वी वक्ता था और जनसभा में हुज़ूर (स0अ0) के विरुद्ध भाषण दिया करता था। हज़रत उमर (रज़ि0) ने कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल! उसके दोनों नीचे के दांत उखड़वा दीजिए कि फिर अच्छा बोल न सके। हज़रत मुहम्मद (स0अ0) ने कहा कि मैं यदि उसके अंग को बिगाड़ूंगा तो यद्यपि संदेष्टा हूं लेकिन अल्लाह उसके बदले में मेरे अंगों को भी बिगाड़ेगा।[1]

युद्धबन्दियों से प्राणमूल्य लेकर छोड़ दिया गया और उनमें जो निर्धन और पढ़ना लिखना जानते थे, उनको कहा गया कि दस–दस बच्चों को पढ़ना लिखना सिखा दें तो छोड़ दिये जाएंगे।[2]

उहद युद्ध का पसमंज़र

बदरयुद्ध के बाद जो बाक़ायदा युद्ध हुआ वह "उहद" का था। बहुदेववादियों को आशा के विपरीत जो करारी हार हुई थी और चुन–चुनकर उनके महत्वपूर्ण लोग मारे गए थे, उस पर मातम से जब उनको फ़ुर्सत मिली तो उनके लिए जो सबसे पहला ज़रूरी काम था, वह उसका बदला लेना था। अबूसुफ़ियान ने क़सम खायी थी कि जब तक वह इसका बदला नहीं लेगा न नहाएगा, न सर में तेल डालेगा।

---

1. सीरतुन्नबीः 1/235–236
2. मुसनद अहमतः 1/247

दो सौ सवारों के साथ वह इस विचार से वह मदीने की ओर बढ़ा कि यहूदी उसकी सहायता करेंगे। बनू नज़ीर के सरदार सलाम बिन मशकम ने उनका भव्य स्वागत किया और संधि के विरुद्ध पूरी सहायता की। सुबह अबूसुफ़ियान ने हमला किया, एक अंसारी (सहाबी) इसमें शहीद हुए। कुछ मकानों और फूस को आग लगा दी गयी, इससे अबूसुफ़ियान के निकट उनकी क़सम पूरी हो गयी। हज़रत मुहम्मद (स0अ0) को मालूम हुआ तो पीछा किया मगर वह लश्कर वहां से भाग निकला और घबराहट में जो सत्तू के बोरे उनके पास थे वह रास्ते में फेंकता गया, जो मुसलमानों के काम आए। अरब में सत्तू को "सवीक" कहते हैं इसलिए इस घटना को "ग़ज़वा–ए–सवीक" के नाम से याद किया जाता है।[1]

अबू सुफ़ियान वापस हुआ तो क़ुरैश के सरदार उसके पास जमा हुए और बदर युद्ध के प्रतिशोध के लिए मदीने पर आक्रमण का परामर्श हुआ। यह सबके दिल की आवाज़ थी लेकिन क़ुरैश को अब मुसलमानों की शक्ति का अनुमान हो गया था, इसलिए उन्होंने इसके लिए बड़ी तैयारी शुरू की। हज़रत अब्बास (रज़ि0) इस्लाम ला चुके थे, मगर अभी भी मक्का में ठहरे हुए थे, उनको परिस्थिति का अंदाज़ा हुआ तो उन्होंने एक तेज़–तर्रार दूत के द्वारा आप (स0अ0)

1. सीरत इब्ने हिशामः 3/1338

को हालात से आगाह किया। आप (स0अ0) ने सूचना लाने हेतु दूत भेजे तो पता चला कि सेना निकट आ चुकी है।

मदीने पर हमले की सूचना और हज़रत मुहम्मद (स०अ०) की राय

आप (स0अ0) को जब मदीने पर हमले की सूचना मिली तो आपने सहाबा से मशविरा किया। वरिष्ट सहाबा (सहचरों) ने यही राय दी कि शहर बन्द हो कर मुक़ाबला किया जाए। स्वयं आप (स0अ0) की राय भी यही थी, मगर उन नवजवान सहाबा ने जो बदर के युद्ध में शामिल न हो सके थे और उनको इसका बड़ा मलाला था, यह चाहा कि आगे बढ़कर मुक़ाबला किया जाए। आप (स0अ0) ने उनके विचारानुसार अन्दर जाकर तैयारी की और बाहर आए। इस तरफ़ सहाबा को दुख हुआ कि हमने आप (स0अ0) की राय के विरुद्ध बात कही। उन्होंने कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल (स0अ0)! आपका जो निर्णय है हम उस पर राज़ी हैं। आप (स0अ0) ने कहा कि नबी (संदेष्टा) के लिए उचित नहीं कि जिरह पहन कर उतार दे। जुमा की नमाज़ पढ़कर आप (स0अ0) एक हज़ार की सेना के साथ निकले। बहुदेववादियों की सेना उहद पहुंच चुकी थी।

युद्ध का आरम्भ

इस युद्ध में लड़ाई का आरम्भ बहुदेववादियों की ओर से हुआ। कुरैश के ध्वजवाहक तलहा ने आगे बढ़कर

मुसलमानों को आवाज़ दी कि ऐ मुसलमानो! तुममें कोई है जो जल्द मुझे नर्क पहुंचा दे या स्वयं मेरे हाथों जन्नत में पहुंच जाए। हज़रत अली (रज़ि0) मुसलमानों की सेना से निकले और एक ही तलवार में उसका काम तमाम कर दिया। तलहा के बाद उसका भाई उस्मान आगे निकला, और वह भी हज़रत हमज़ा रज़ि0 के हाथों मारा गया। उसके बाद आम जंग शुरू हुई। आरम्भ में पड़ला मुसलमानों का भारी था, और थोड़ी ही देर में शत्रु पीछे की ओर से पलटने लगे। मुसलमानों का रुख़ माल–ए–ग़नीमत (परिहार) की ओर हुआ। यहां तक कि रमात पहाड़ी पर हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर के नेतृत्व में जो मुसलमान पीछे की ओर खड़े किए गए थे, वे भी फ़तेह देखकर नीचे उतरने लगे। हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि0) ने बहुत रोका, मगर वे रुक न सके कि अब इसकी आवश्यकता नहीं। यह देखकर ख़ालिद बिन वलीद ने पीछे से हमला किया। अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि0) और अन्य सहाबा जो पहाड़ी पर रह गए थे, बहादुरी से लड़े मगर सब शहीद हो गए। अब फिर घमसान युद्ध छिड़ गया और मुसलमानों की बड़ी संख्या शहीद हुई। आप (स0अ0) के पवित्र दांत शहीद हुए और ख़बर उड़ गई कि आप (स0अ0) को शहीद कर दिया गया।

दुश्मनों ने पूरा ज़ोर आप (स0अ0) की ओर लगा रखा था, लेकिन सहाबा (सहचरों) ने अपने आप को ढाल बना

दिया था। अंततः आप (स0अ0) सहाबा की एक टुकड़ी के साथ पहाड़ की चोटी पर चढ़ गए। दुश्मनों ने पीछा करने की चेष्टा की, मगर सहाबा ने इतने पत्थर बरसाए कि वे आगे न बढ़ सके।

युद्ध की समाप्ति पर मालूम हुआ कि सत्तर सहाबा शहीद हुए जिनमें आप (स0अ0) के चचा हमज़ा (रज़ि0) भी थे, जिनको आप (स0अ0) की ओर से "शहीदों के सरदार" की उपाधि मिली।

बहुदेववादियों की बर्बरता

कुरैश की महिलाओं ने मुसलमानों की लाशों के साथ दुर्व्यवहार किया, उनके नाक–कान काटे। हिन्दा नामक महिला ने उन अंगो का हार बनाकर अपने गले में डाला। हज़रत हमज़ा (रज़ि0) की लाश पर गई, उनका पेट चीर कर कलेजा निकाल कर चबा गयी लेकिन गले के नीचे न उतरा तो उगलना पड़ा।

यहूदियों की संधि अवहेलना

यहूदियों का इतिहास वादाख़िलाफ़ी और हत्या व गुण्डागर्दी से भरा पड़ा है। नबियों (संदेष्टाओं) को झुटलाना, उनको शहीद कर देना उनकी पृवृत्तिर रही है। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को अपने विवेकानुसार स्वयं सूली पर चढ़ा दिया जिसकी वास्तविकता कुरआन ने खोली किः

﴿وَمَا قَتَلُوهُ وَمَا صَلَبُوهُ وَلَكِن شُبِّهَ لَهُمْ﴾

"उन्होंने न उनकी हत्या की और न सूली दी बल्कि उन्हें संदेह में डाल दिया गया।" (सूरह निसाः 157)

फिर उनके शातिराना प्रवृत्ति का ही अंश था कि एक यहूदी पोलस ने रफ़अ ईसा अलैहिस्सलाम के बाद कपट अपनाया, ऊपर से उसने दिखाया कि वह हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम से मिलकर आया है और उसने सत्य धर्म स्वीकार कर लिया है। उसको हज़रत ईसा ने दीक्षा दी है। सीधे–सादे लोग उसके झांसे में आ गए और उन्होंने हज़रत ईसा की शिक्षा–दीक्षा को बदलकर एक नया धर्म बना डाला। आज जो ईसाइयत है, वह उसी "पाल" की दी हुई है, जिसको ईसाइयों ने संत का दर्जा दिया।

हज़रत मुहम्मद (स0अ0) के अभ्यूदय (नुबूव्वत) की उनको जब सूचना मिली तो उनपर सांप लोट गया। आप (स0अ0) के देशत्याग के बाद यद्यपि उन्होंने आप (स0अ0) से विवशतापूर्वक समझौता कर लिया, मगर वे ताक में रहे कि किसी भी स्थिति में मुसलमानों का हानि पहुंचायी जाए और अपनी रियासत बहाल की जाए। औस व ख़ज़रज के क़बीले जिनको वे हमेशा ताना दिया करते थे कि अन्तिम संदेष्टा आने वाला है, उसके माध्यम से मिलकर हम तुम्हारी छुट्टी कर देंगे। मामला उल्टा हो चुका था, दोनों क़बीले मुसलमान हो चुके थे और "अन्सार" की उपाधि मिल चुकी

थी। यह चीज़ें यहूदियों को एक आंख न सुहाती थीं और वे कोशिश में रहते कि दोबारा दोनों कबीलों को लड़ा दिया जाए ताकि मुसलमान कमज़ोर हो जाएं और उनको सब पर बादशाही हासिल हा जाए।

एक बार अन्सारी सहाबा बैठे बातें कर रहे थे, एक यहूदी बूढ़ा शास बिन कैस नामक वहां से गुज़रा। उसको देखकर दुख हुआ कि यह दोनों क़बीले जो कभी एक दूसरे का गिरेबान पकड़े रहते थे, और हम उनपर हुकूमत करते थे, आप घन्ष्टि सहयोगी हैं। उसने यहूदी नवजवान को भेजा कि जाकर उनमें बैठ जाओ "बुआस युद्ध" का ज़िक्र छेड़ो। परिणाम यह हुआ कि दोनों क़बीलों को पुरानी घटनाएं याद आ गई और दोबारा हाथ दिखाने के वादे क़समें होने लगे। आप (स0अ0) को सूचना मिली, आप आए, शिकवे गिले दूर हुए, उस पर यह आयत उतरी:

﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِن تُطِيعُوا فَرِيقًا مِّنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ يَرُدُّوكُم بَعْدَ إِيمَانِكُمْ كَافِرِينَ﴾

"ऐ ईमान वालो! यदि तुम किताब वालों में से किसी गिरोह की बात मान लोगे तो वे तुम्हें ईमान लाने के बाद काफ़िर बनाकर छोड़ेंगे।" (सूरह आले इमरानः 100)

उसके उलट स्वयं हुज़ूर (स0अ0) का मामला उनके प्रति नर्मी और अनुकूलता का था, इसलिए कि वे "अहले किताब" थे। सही बुख़ारी में है:

और आप (स0अ0) को जिस चीज़ के बारे में कोई आदेश न हुआ तो उसमें "अहले किताब" की बातों को पसंद करते थे।

लेकिन यहूदियों का हाल यह था कि वे आप (स0अ0) के पास आते तो "अस्सलाम अलैकुम" के स्थान पर "अस्सामु अलैकुम" (तुम पर मौत हो) कहकर अपनी भड़ास निकालते। वे आपकी मजलिस (बैठक) में आते तो "राइना" कहना होता तो खींच कर "राईना" कर देते और इससे अपना दिल ठण्डा करते।

मक्का के बहुदेववादियों से भी यहूदी अन्दर–अन्दर सांठ–गांठ करते और उनसे कहते कि तुम्हारा धर्म उनके मज़हब से अच्छा है, और अब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलूल के नेतृत्व में कपटाचारियों (मुनाफ़िकों) का एक गिरोह पीठ पीछे उनके साथ था।

बनू क़ैनक़ाअ

मदीने में यहूदियों के तीन बड़े क़बीले थे। बनू क़ैनक़ाअ, बनू नज़ीर, बनु क़ुरैज़ा। इन तीनों में सबसे पहले बनू क़ैनक़ाअ में संधि तोड़ी। बदर युद्ध में मुसलमानों की फ़तेह की अवसर पर इन्होंने खुलकर उपद्रव किया और ईर्ष्या प्रकट की। संयोगवश उन्हीं दिनों में एक घटना यह हुई कि एक मुसलमान बुर्क़ा पोश महिला यहूदी की दुकान से कुछ ख़रीदने गई, यहूदियों ने उनको

अतिअपमानित किया, एक मुसलमान ने देखा तो तैश में आकर उसने यहूदियों को मार दिया, परिणामस्वरूप यहूदियों ने उस मुसलमान को मार डाला। आप (स0अ0) वहां गए तो उन्होंने साफ़–साफ़ संधि तोड़ने का एलान कर दिया और कह दिया कि हम कुरैश नहीं हैं, हमसे मामला पड़ेगा तो हम दिखा देंगे कि युद्ध किस चीज़ का नाम है। विवश होकर आप (स0अ0) ने उनका घेराव किया। अंततः वे इस बात पर राज़ी हुए कि आप (स0अ0) का निर्णय हमें स्वीकार है। आप (स0अ0) ने उनको तड़ीपार करने का निर्णय सुनाया और वे शाम (सीरिया) के इलाक़ों में जाकर आबाद हो गए।

बनू नज़ीर

बनू नज़ीर की संधि उल्लघंन का विवरण सुनन अबू दाऊद में है कि कुरैश काफ़िरों ने देशत्याग के बाद ही कपटियों के सरदार को पत्र लिखा था, जिसका ज़िक्र ऊपर हो चुका है। जब कुरैश ने देखा कि इस पर कोई क़दम नहीं उठाया गया तो उन्होंने दूसरा पत्र मदीना के यहूद को लिखा, इसके शब्द इस प्रकार हैः

"तुम लोगों के पास युद्ध सामग्री और बड़े–बड़े क़िले हैं, तुम हमारे विरोधी (मुहम्मद (स0अ0)) से जंग करो, अन्यथा हम तुम्हारे साथ यह–यह करेंगे और कोई चीज़

हमको तुम्हारी महिलाओं के कड़ों तक पहुंचने से रोक न सकेगी।"

उसके बाद बनू नज़ीर ने संधि को तोड़ डालने का इरादा कर लिया और आप (स0अ0) को कहला भेजा कि आप तीस आदमियों के साथ आएं, हमारे तीस विद्वान आपसे वार्ता करेंगे, आप (स0अ0) उनको निश्चिन्त कर दें और वे इस्लाम धर्म स्वीकार कर लें तो हम भी मुसलमान हो जाएंगे, आप (स0अ0) को मक्का के बहुदेववादियों के पत्र का ज्ञान हो चुका था, इसलिए आप (स0अ0) कुछ दस्तों के साथ वहां गए और कहा कि हमें तुमपर भरोसा नहीं है कि तुम पहले मुझसे इस पर संधि करो। उन्होंने समझौता से साफ़ इनकार कर दिया। आप (स0अ0) फिर बनू कुरैज़ा के पास गए, उन्होंने संधि कर ली।

बनू नज़ीर के यहां जब आप (स0अ0) गए थे तो उन्होंने एक बड़ी दुष्टता यह की थी कि आप (स0अ0) को एक दीवार के नीचे बिठा दिया और इब्ने जहाश नामक एक दुष्ट बड़ा पत्थर लेकर ऊपर गया ताकि ऊपर से पत्थर गिराकर आप (स0अ0) को शहीद कर दे, मगर अल्लाह ने वह्य (इलाही वाणी) के द्वारा आपको सूचित कर दिया और आप (स0अ0) वहां से वापस लौट आए।

बनू नज़ीर से कपटियों के सरदार ने कहला भेजा था कि तुम बात मत मानना, बनू कुरैज़ा भी तुम्हारा साथ देंगे और मैं भी दो हज़ार की सेना के साथ तुम्हारी सहायता

हेतु आता हूं। आप (स0अ0) ने बनू नज़ीर का घेराव कर लिया। न बनू कुरैज़ा ने उनका साथ दिया और कपटियों का सरदार सहायता हेतु आया। पन्द्रह दिन घेराव रहा, अंततः उन्होंने हज़रत मुहम्मद (स0अ0) की सेवा में निवेदन किया कि हमको छोड़ दिया जाए, जितना हम ले जा सकें, ले जाने दिया जाए। आप (स0अ0) ने उनका अनुरोध स्वीकार कर लिया। उन्होंने स्वयं अपने हाथों से अपने घरों को गिराया और जितना सामान ले जा सके, ऊटनियों पर लादकर तड़ीपार हो गए।

ख़न्दक़ युद्ध

अब कुरैश और यहूद मुसलमानों से शत्रुता हेतु पूरी तरह उतारू हो गए। ख़न्दक़ के आम हमले से पूर्व विभिन्न क़बीलों ने मुक़ाबले की कोशिश की मगर नाकाम हुए। अंततः बनू नज़ीर के यहूदी जब ख़ैबर पहुंचे तो उन्होंने बड़े षडयन्त्र रचने शुरू किए। उनके सरदार मक्का गए और बहुदेववादियों से कहा कि यदि तुम साथ दो तो मुसलमानों का ख़ात्मा आसान है। यह उनके मन की आवाज़ थी। यहूद और कुरैश ने मिलकर अन्य क़बीलों को भी तैयार किया, यहां तक कि दस हज़ार की एक सेना तैयार हो गयी। बनू नज़ीर और ख़ैबर के यहूदियों ने बनू कुरैज़ा के यहूदियों को भी संधि उल्लघंन हेतु तैयार कर लिया जिससे सेना में और बढ़ोत्तरी हुई।

यह सेना तीन भागों में विघटित होकर इस ज़ोर से हमलावर हुई कि मदीने की धरती हिल गई। अल्लाह ने पवित्र कुरआन में दृश्यांकन इस प्रकार किया है:

﴿ وَإِذْ زَاغَتْ الأَبْصَارُ وَبَلَغَتِ الْقُلُوبُ الْحَنَاجِرَ وَتَظُنُّونَ بِاللَّهِ الظُّنُونَا هُنَالِكَ ابْتُلِيَ الْمُؤْمِنُونَ وَزُلْزِلُوا زِلْزَالاً شَدِيدًا﴾

"और जब निगाहें डगमगाने लगीं और कलेजे मुंह को आ गए और तुम अल्लाह से तरह–तरह के गुमान करने लगे, उस समय ईमान वालों की परीक्षा होकर रह गई और उनको झिंझोड़ कर रख दिया गया।" (सूरह एहज़ाबः 1–11)

हज़रत मुहम्मद (स0अ0) ने सहाबा से राय ली। हज़रत सलमान फ़ारसी (रज़ि0) ने ख़न्दक़ खोदने की राय दी, इसलिए इसको "ख़न्दक़ युद्ध" कहते हैं। एक महीने तक शत्रु सेना ने ख़न्दक़ की घेराबन्दी किए रखा, जिसमें कभी–कभी सख़्त मुक़ाबला भी हुआ और मुसलमानों ने यह अवधि जिस संयमता के साथ गुज़ारी, उसके विवरण का विषय सीरत की किताबें हैं।

अल्लाह ने सहायता की, एक दिन ऐसी आंधी चली कि खेमे–तम्बू उखड़ गए, हांडिया उलट गईं और फ़ौज में बेदिली फ़ैल गई और मदीने का उदयाचल लगभग एक महीने तक धूल–धक्कड़ से अटा रहने के बाद साफ़ हो गया।

अल्लाह ने इस एहसान का ज़िक्र पवित्र कुरआन में किया कि:

"और अल्लाह ने काफ़िरों को क्रोध में भरा फेर दिया, कुछ भलाई उनके हाथ न लगी और मुसलमानों की ओर से युद्ध हेतु अल्लाह ख़ुद काफ़ी हो गया।" (सूरह एहज़ाबः 25)

बनू कुरैज़ा

ख़न्दक़ युद्ध में बनू कुरैज़ा ने खुलकर संधि का उल्लंघन किया, अब उसका निवारण आवश्यक था। मुसलमान फ़ौजों ने उनके क़िलों का घेराव किया, अंततः स्वयं उन्हीं के अनुरोध पर घेराबन्दी हटा ली गई कि हज़रत साद बिन माज़ (रज़ि0) जो निर्णय करें हम इस पर सहमत हैं, हज़रत साद (रज़ि0) का औस क़बीला उस क़बीले का मित्र था।

हज़रत साद (रज़ि0) ने जो निर्णय लिया वह तौरात के आदेशानुसार था। वह निर्णय यह था कि लड़ने वाले मार दिये जाएं, महिलाएं और बच्चे क़ैद हों। धन–सम्पत्ति, ग़नीमत (परिहार) क़रार दिया जाए।

"आप (स0अ0) ने जब निर्णय सुना तो कहा कि यह आकाशीय निर्णय है। और यहूदियों ने जब सुना तो उनकी ज़बान से जो वाक्य निकले उससे भी प्रमाणित होता है कि वे स्वयं उस निर्णय को इलाही आदेश के अनुसार समझते थे।"

हुदैबिया संधि

हज़रत मुहम्मद (स0अ0) जब मक्का से निकले थे तो आप (स0अ0) ने उसको संबोधित करते हुए कहा था कि:

"तू कितना अच्छा शहर है और कितना प्रिय है, यदि मेरी क़ौम मुझे यहां से न निकालती तो मैं तेरे सिवा किसी अन्य स्थान पर न रहता।"

आदरणीय सहाबा (सहचरों) ने भी जिस प्रकार बिना धन संपत्ति के मक्का छोड़कर आए, हर एक के दिल में तड़प थी कि किस प्रकार फिर उपस्थिति भाग्य बने। ख़न्दक़ युद्ध में सेनाओं के जो बादल चहुंओर उमड़ कर आए थे, वे सब छंट चुके थे। इसी दौरान अल्लाह के रसूल (स0अ0) ने एक दिन अपने सपने का वर्णन किया, जिसमें मक्का हाज़िरी का ज़िक्र था। नबी (संदेष्टा) का ख़्वाब "वह्य" (इलाही वाणी) का दर्जा रखती है, सहाबा यह सुनकर खुशी से झूम उठे।

7 हिजरी को एक बड़े काफ़िले के साथ यात्रा आरम्भ हुई। सतर्कता हेतु एक व्यक्ति रवाना कर दिया गया कि वह कुरैश की सूचना लाए। जब काफ़िला असफ़ान पहुंचा तो उसने आकर ख़बर दी कि कुरैश ने ऐलान कर दिया कि मुहम्मद (स0अ0) कभी मक्का नहीं आ सकते। कुरैश ने बड़े ज़ोर–शोर से तैयारी शुरू की और आस–पास के इलाक़े में कहला भेजा कि मुसलमान मक्का आए हैं, हमें

उनसे युद्ध करना है। आप (स0अ0) आगे बढ़कर हुदैबिया में ठहर गए। वहां बुदैल बिन वरक़ा जो बनू ख़ुज़ाआ क़बीले के सरदार थे आए। यह क़बीला मुसलमानों का मित्र क़बीला था। उन्होंने आकर कहा कि मक्का के लोग आपको हर्गिज़ जाने न देंगे और उन्होंने युद्ध की तैयारी कर ली है। पता करने पर मालूम हुआ कि मुक़ाबले के लिए सेना मक्का से रवाना हो चुकी है और ख़ालिद बिन वलीद जिस टुकड़ी के सरदार हैं, वह ग़मीम तक पहुंच चुकी है। आप (स0अ0) ने बुदैल बिन वरक़ा से संदेश भेजा कि फ़िलहाल जंग बंदी का समझौता कर लिया जाए, कुरैश युद्ध कर–कर के थक चुके हैं। बुदैल ने मक्का के काफ़िरों को जब संदेश भेजा तो शुरू में कुछ लोग बोले कि हमें कुछ नहीं सुनना है, मगर उरवा बिन मसऊद ने कहा कि यह एक अच्छा प्रस्ताव है, मुझे अवसर दो तो मैं स्वयं बात कर लूं।

उरवा आप (स0अ0) के पास आए, सहाबा की कार्यशैली देखकर प्रभावित होकर रह गये, मगर बात पूरी नहीं हो सकी थी, इसलिए आप (स0अ0) ने ख़राश बिन उमय्या (रज़ि0) को पूर्व संधि हेतु भेजा। कुरैश ने उनके ऊंट को मार डाला जो स्वयं आप (स0अ0) का था। वह किसी प्रकार जान बचाकर वापस आए तो आप (स0अ0) ने हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान (रज़ि0) को भेजा, उनके बारे में एक ख़बर उड़ी कि वे शहीद कर दिये गए। इसी के

लिए आप (स0अ0) ने "बेअत–ए–रिज़वान" ली, बाद में मालूम हुआ कि यह ख़बर ग़लत थी।

इधर क़ुरैश ने सुहैल बिन अम्र को संधि हेतु भेजा, लेकिन साफ़ कह दिया कि उमरा करने नहीं दिया जाएगा। वे आए और संधि शर्तों पर बात हुई। अंततः आप (स0अ0) ने उनकी सभी शर्तों को मान लिया और वह समझौता कर लिया गया जो हुदैबिया संधि के नाम से प्रसिद्ध है।

ईशदौत्य (नुबूव्वत) के बाद से मक्का का तेरह वर्षीय जीवन और मदीने के यह छः साल किस प्रकार से बीते, मक्का के काफ़िरों की ओर से कौन सी मुसीबत थी जो मुसलमानों पर डालने की चेष्टा न की गई हो। अब जबकि मुसलमान इस स्थिति में थे कि अपनी बात पर ज़िद करते, जिन तमन्नाओं के साथ वह मक्का के एक दम निकट पहुंच चुके थे उनको पूरा करते। दिलों की क्या भावनाएं रही होंगी। इसके बाद आप संधि की धाराएं देखिये और अनुमान लगाइये कि उन पर क्या बीती होगी। उनके लिए जान देना आसान था मगर उन धाराओं को स्वीकार करना सरल न था लेकिन उन्होंने इस संयम प्रक्रिया में जिस बलिदान का प्रदर्शन किया, वह सहचरों (सहाबा) के इतिहास के यादगार है, और यही वह क़ुर्बानी थी जो फ़तह का विजय द्वारा बनी। संधि की धाराएं निम्नलिखित हैं:

1– मुसलमान इस वर्ष वापस आ जाएं।

2– अगले साल आएं और केवल तीन दिन ठहर कर चले जाएं।

3– हथियार लगाकर न आएं, केवल तलवार साथ लाएं, वह भी म्यान में और म्यान भी थैले में।

4– मक्का में जो मुसलमान पहले से रह रहे हैं, उनमें से किसी को भी अपने साथ न ले जाएं और मुसलमानों में से कोई मक्का में रह जाना चाहे तो उसको न रोकें।

5– काफ़िरों या मुसलमानों में से कोई व्यक्ति यदि मदीने जाए तो वापस कर दिया जाए लेकिन यदि कोई मुसलमान मक्का में जाएगा तो वापस नहीं किया जाएगा।

6– अरब क़बीलों को अधिकार होगा कि जिसके साथ चाहें संधि में शरीक हो जाएं।

समझौते की धाराएं अभी लिखी जा रही थीं कि हज़रत अबू जन्दल (रज़ि0) बेड़ियों में जकड़े हुए, गिरते–पड़ते, असहाय की दशा में पहुंचे और दया की विनती की। सुहैल ने कहा कि संधि की शर्तों को पूरा करने का यह प्रथम अवसर है, इसको हमें वापस किया जाए। अल्लाह के रसूल (स0अ0) ने बड़ी वितनी की कि अभी संधि पूरी नहीं हुई है कि, इनको इससे पृथक कर दिया जाए। सुहैल ने साफ़ कह दिया कि यदि ऐसा है तो संधि की कोई आवश्यकता नहीं है। विवश होकर आप (स0अ0) को मानना पड़ा। अल्लामा शिबली नोमानी रह0 के शब्दों में:

"इस स्थिति को बर्दाश्त करना सहाबा (रज़ि0) की आज्ञाकारिता की कठोर परीक्षा थी। एक ओर (ज़ाहिर में) इस्लाम का अपमान है। अबूजन्दल (रज़ि0) बेड़ियां पहने चौदह सौ इस्लाम के जांनिसारों से विनती करते हैं, सबके दिल जोश से लबालब हैं और यदि तनिक भी हज़रत मुहम्मद (स0अ0) की ओर इशारा हो जाए तो निर्णय करने वाली तलवार मौजूद है। दूसरी ओर संधि पर हस्ताक्षर हो चुके हैं और वचन निभाने का दायित्व है। हज़रत मुहम्मद (स0अ0) ने हज़रत अबूजन्दल (रज़ि0) की ओर देखा और कहाः "अबू जन्दल! धैर्य और संयम से काम लो, अल्लाह तुम्हारे लिए और पीड़ितों के लिए कोई राह निकालेगा, संधि हो चुकी है, और हम संधि उल्लंघन नहीं कर सकते।"[1]

आप (स0अ0) ने आदेश दिया कि लोग क़ुर्बानी करें ओर एहराम (विशेष पहनावा) उतार दें। सब पर मूर्छा की सी स्थिति थी। आप (स0अ0) अन्दर गए और परिस्थिति बताई तो हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि0) ने कहा कि आप स्वयं और एहराम उतारने के लिए बाल उतरवा लें। आप (स0अ0) बाहर आए। आप (स0अ0) का क़ुर्बानी कराना था कि जांनिसार और आज्ञाकारी सहाबा भी क़ुर्बानी करने लगे और एहराम उतारने लगे।

---

1. सीरत इब्ने हिशामः 2/ 316

तीन दिन हुदैबिया में ठहराब के बाद आप (स0अ0) सहाबा के साथ मदीना रवाना हुए तो यह आयत अवतरित हुई:

﴿ إِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُّبِينًا ﴾

"निःसंदेह हमने आपको खुली फ़तह अता की है।"

(सूरह फ़तहः 1)

जिस चीज़ को पराजय समझा जा रहा था, अल्लाह ने उसको जीत क़रार दिया और आगे हालात ने इस वास्तविकता को खोल दिया।

इतिहास की पुस्तकों से अनुमान लगाया जाता है कि हुदैबिया संधि जो केवल दो वर्ष शेष रह सकी, इतनी बड़ी संख्या इस्लाम की परिधि में दाख़िल हुई कि इससे पूर्व न हुई थी। हज़रत ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि0) और हज़रत अम्र बिन आस (रज़ि0) इसी दौर की यादगार हैं। इसका बड़ा कारण यह था कि आपस में मिलने–जुलने का अवसर मिला और इस्लामिक प्रबन्ध, व्यवहार, सामाजिकता जिससे वे अवगत न हो सके थे खुलकर सामने आया।

ख़ैबर के यहूदी

यह बात गुज़र चुकी है कि बनू नज़ीर जब अपनी शरारतों के कारण तड़ीपार किए गए थे तो उनके बड़े–बड़े सरदार ख़ैबर में जाकर आबाद हुए। वहां उनका ऐसा सम्मान हुआ कि उनको वहां का भी सरदार मान लिया गया। ख़ैबर अरब के यहूदियों की शक्ति का बड़ा केन्द्र

था। जब बनू नज़ीर के कद्दावर लोग वहां पहुंचे तो उन्होंने वहां भी शरारतों में कमी नहीं की। ग़तफ़ान कबीले से भी उन्होंने इस्लाम के लिए साज़िश की, दूसरी ओर मदीने के कपटी पीठ पीछे उनका समर्थन कर रहे थे।

हज़रत मुहम्मद (स0अ0) को जब इसका विवरण मिला तो आप (स0अ0) उनको कुचलने के लिए निकले। ग़तफ़ान क़बीले ने यह समाचार सुना तो उसने निकलने की हिम्मत न की और ख़ैबर के क़बीले एक–एक करके फ़तह होते गए। जब विजयी अभियान पूर्ण हुआ तो यहूद ने निवेदन किया कि ज़मीन हमारे क़ब्ज़े मे रहने दी जाए। यह आग्रह स्वीकार हुआ। सुनन अबूदाऊद में इसका वर्णन है। इसके अतिरिक्त यह भी है कि फलों को तोड़ने का समय आता तो आप (स0अ0) हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा को भेजते। वे फलों को तुड़वा कर दो भाग करते और यहूदियों से कहते कि तुम जो चाहो इसमें ले लो। इस पर वे कहते कि यह वह अन्याय है जिसके आधार पर ज़मीन व आसमान क़ायम है।

रूमियों से जंग

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम शासक शरहबील बिन अम्र ग़स्सानी को इस्लाम का निमंत्रण देने हेतु एक पत्र भेजा। हज़रत हारिस बिन उमैर अज़्दी यह पत्र लेकर गए। शरहबील ने आदेश दिया कि उनको बांध

दिया जाए, फिर अपने सामने बुलाकर शहीद कर दिया। दूतों की उस दौर में बड़ी अहमियत थी। जब आप (स0अ0) को मालूम हुआ तो आपने इस क्रूर कृत्य अनुचित ख़ून का बदला लेने के लिए एक बड़ी फ़ौज रवाना की। हज़रत ज़ैद बिन हारिस (रज़ि0) को इसका सेनापति बनाया गया। जब यह सेना निकट पहुंची तो मालूम हुआ कि हिरबल बलक़ा के क़रीब एक लाख सेना के साथ पड़ाव डाले हुए है। इस्लामी फ़ौज ईमानी जज़्बे जोश में आगे बढ़ी। तीन हज़ार का तीन लाख से मुक़ाबला ही क्या था। हज़रत ज़ैद (रज़ि0) शहीद हो गए, उसके बाद हज़रत जाफ़र (रज़ि0) आगे बढ़े लेकिन वह भी वीरता दिखाते हुए शहीद हो गए, फिर हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा (रज़ि0) ने ध्वज संभाला, लेकिन वे भी शहादत से प्रतिष्ठित हुए। अंततः हज़रत ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि0) ने ध्वज हाथ में लिया और सेना को पराजय से हटाकर सुरक्षित मदीने ले आए। यह "मौता युद्ध" कहलाता है।

फिर जब 9 हिजरी में आप (स0अ0) को यह समाचार मिला कि रूमी सेनाएं अरब की उत्तरी सरहदों पर आक्रमण की तैयारी कर रही हैं तो आप (स0अ0) उनसे मुक़ाबले के लिए तीन हज़ार की फ़ौजें लेकर निर्धनता की हालत में निकले। सवारियां भी कम थीं। यात्रा सामग्री भी न थी, पानी की बड़ी क़िल्लत थी। इन समस्त पीड़ा को झेलते हुए आप (स0अ0) ने सेना के साथ तबूक में पड़ाव डाला। इस

क़दम का रूमियों पर बड़ा प्रभाव पड़ा कि उन्होंने हमले का इरादा छोड़ दिया। केवल दौमतुल जुन्दल के शासक की ओर से हमले की सूचना मिली तो आप (स0अ0) ने हज़रत ख़ालिद (रज़ि0) को पांच सौ सवारों के साथ भेजा।

उन्होंने उसको गिरफ़्तार करके आप (स0अ0) की सेवा में भेजवा दिया। आप (स0अ0) ने उसका ख़ून माफ़ कर दिया और आज़ाद करके जिज़्या पर संधि कर ली। इस प्रकार एक महीने रहकर आप (स0अ0) वतन वापस हुए और रूमियों की ओर से जो ख़तरा था वह टल गया। एक प्रकार से उन्होंने क़दम पीछे खींच लिए। यह तबूक युद्ध के नाम से प्रसिद्ध है।

कुरैश का संधि उल्लंघन और मक्का विजय

हुदैबिया में कुरैश से जो संधि हुई थी उसमें बनू बक्र कुरैश के साथ और बनू खुज़ाआ मुसलमानों के साथ हो गए थे। वे दोनों क़बीले भी इस युद्ध में संधि के पाबन्द थे। अभी दो वर्ष की अवधि बीती थी कि बनू बक्र ने अचानक बनू खुज़ाआ पर हमला किया और उनकी बर्बरता पूर्वक हत्या की। ढकेलते हुए "हरम" तक ले आए। "हरम" पहुंच कर जब कुछ लोगों ने कहा कि अब हम "हरम" में प्रवेश कर गए, अपने उपासक का तो मान रखो, तो उन्होंने कहा कि आज के दिन कोई पूज्य नहीं।

बनू ख़ुज़ाआ लुटे–पिटे आप (स0अ0) की सेवा में उपस्थित हुए। बड़ी दर्द में डूबी विनती की और कुरैश के संधि उल्लंघन का ज़िक्र किया कि वे खुले आम बनूबक्र के साथ शामिल थे। आप (स0अ0) ने यह सुनकर कहा कि तुम्हारी ज़रूर मदद होगी।

आप (स0अ0) ने इसकी पुष्टि के लिए आदमी भेजा और कुरैश के सामने तीन बातें रखीं:

1– वे ख़ुज़आ के मारे गए लोगों का बदला दें।

2– जिसने इस संधि को तोड़ा उससे संबंध विच्छेद का प्रदर्शन करें।

3– अन्यथा उन्होंने जैसा किया है उनके साथ भी वैसा किया जाएगा।

जब कुरैश के सामने यह बात आई तो उनमें से कुछ सरदारों ने कहा कि हम बराबर का जवाब पसंद करेंगे। इस प्रकार कुरैश की ज़िम्मेदारी से मुसलमान बरी हो गए। और उन पर दलील क़ायम हो गयी। इधर जब दूत वापस हुआ तो कुरैशियों को अंदेशा हुआ और उन्होंने अबू सुफ़ियान को नई संधि हेतु भेजा, लेकिन तीर कमान से निकल चुका था।

हज़रत मुहम्मद (स0अ0) दस हज़ार की सेना लेकर मदीने से निकले। मुर्रज़्ज़ुहरान पहुंचकर सेना ने पड़ाव डाला। आप (स0अ0) ने आदेश दिया कि आग के अलाव जलाए जाएं। उसी समय अबू सुफ़ियान जासूसी के लिए

निकले थे, उन्होंने जब यह दृश्य देखा तो उनकी ज़बान से निकला कि इस शान का लश्कर और इस प्रकार की रोशनी तो मैंने कभी नहीं देखी। हज़रत अब्बास (रज़ि0) उनकी आवाज़ पहचान गए और चुपके से अपने खच्चर पर बिठाकर आप (स0अ0) की सेवा में ले गए। आप (स0अ0) ने उनको इस्लाम का निमन्त्रण दिया और हज़रत अब्बास (रज़ि0) के कहने पर उन्होंने कलमा पढ़ लिया।

जब सेना ने मक्का में प्रवेश किया तो आप (स0अ0) ने निर्देश दिया कि किसी पर हाथ न उठाया जाए, सिवाए उसके जो मुक़ाबले हेतु खड़ा हो जाए। मक्का वालों की समस्त जाएदाद के बारे में भी आप (स0अ0) ने निर्देश दिया कि इस पर ज़ोर ज़बरदस्ती न की जाए। आप (स0अ0) इस शान के साथ मक्का में दाख़िल हुए कि पवित्र सिर दासत्व व नम्रता से बिल्कुल झुक गया था, निकट था कि आपकी ठोड़ी ऊंटनी के कोहान से लग जाए।

जब हज़रत साद बिन उबादा (रज़ि0) जो अंसार दस्ते के सेनापति थे, हज़रत अबूसुफ़ियान (रज़ि0) के पास से गुज़रे तो उन्होंने कहाः

आज घमासान का युद्ध और ख़ून बहाने का दिन है, आज काबा में सब जाएज़ होगा, आज अल्लाह ने कुरैश को अपमानित किया है।

जब आप (स0अ0) अपने दस्ते के साथ अबू सुफ़ियान (रज़ि0) के पास से गुज़रे तो उन्होंने आप (स0अ0) से

इसकी शिकायत की और कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल आपने सुना, साद ((रज़ि0)) ने अभी क्या कहा? आपने पूछा क्या कहा? उन्होंने वह सब दोहरा दिया।

हज़रत साद (रज़ि0) के वाक्य को आप (स0अ0) ने नापसंद किया और कहाः

"नहीं, आज तो दया व क्षमा का दिन है, आज अल्लाह कुरैश को सम्मानित करेगा और काबे की प्रतिष्ठा बताएगा।"[1]

अपने दुश्मनों के साथ व्यवहार

आप (स0अ0) ने जब काबा से निकलने के लिए उसका दरवाज़ा खोला तो कुरैश पूरे "हरम" में पंक्तिबद्ध खड़े थे और प्रतीक्षारत थे कि अब आप (स0अ0) क्या करने वाले हैं। आप (स0अ0) ने दरवाज़े के दोनों बाज़ू थाम लिए। सभी लोग आप (स0अ0) के नीचे थे फिर आप (स0अ0) ने कहाः एक अल्लाह के अतिरिक्त कोई ईश्वर नहीं है, कोई उसका साझी नहीं है। उसने अपना वादा सच्चा किया है, अपने बन्दे की मदद की और समस्त जत्थों को अकेले पराजित किया। याद रखो कि समस्त अंहकार, समस्त प्रतिशोध, नरहत्या सब मेरे पैरों के नीचे हैं, केवल काबे का प्रबन्ध और हाजियों को पानी पिलाने वाला काम इससे

1. नबी–ए–रहमतः 2/68

अलग है। ऐ क़ुरैश क़ौम! अब अज्ञानता का अंहकार और वंश का अभिमान ख़ुदा ने मिटा दिया। सभी लोग आदम अलैहिस्सलाम के वंश से हैं और आदम अलैहिस्सलाम मिट्टी से बने थे।

उसके बाद आप (स0अ0) ने यह आयत पढ़ीः

﴿يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّا خَلَقْنَاكُم مِّن ذَكَرٍ وَأُنثَى وَجَعَلْنَاكُمْ شُعُوبًا وَقَبَائِلَ لِتَعَارَفُوا إِنَّ أَكْرَمَكُمْ عِندَ اللَّهِ أَتْقَاكُمْ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ خَبِيرٌ﴾

"लोगो! हमने तुमको और एक मर्द और एक औरत से पैदा किया और तुम्हारी क़ौम और क़बीले बनाए ताकि एक–दूसरे को पहचान सको और अल्लाह के निकट तुममें अधिक सम्मान वाला वह है जो अधिक परहेज़गार (अल्लाह से डरने वाला) है। निसंदेह ख़ुदा सबकुछ जानने वाला और सबसे ख़बरदार है।" (सूरह हुजुरातः 13)

''सम्बोधन के बाद आप (स0अ0) ने भीड़ की ओर देखा तो क़ुरैश के सरदार सामने थे। उनमें वे जोशीले भी थे जो इस्लाम को मिटाने में सबसे आगे थे, वे भी थे जिनकी ज़बाने हज़रत मुहम्मद (स0अ0) पर गालियों के बादल बरसाया करती थीं, वे भी थे जिन्होंने पवित्र व्यक्तित्व हज़र मुहम्मद (स0अ0) की शान मे गुस्ताख़ियां की थी, वे भी थे जिन्होंने हुज़ूर (स0अ0) के रास्ते में कांटे बिछाए थे, वे भी थे जो उपदेश देते समय हज़रत मुहम्मद (स0अ0) की एड़ियों को रक्तरंजित कर दिया करते थे, वे भी थे जिनकी

प्यास "ख़ून–ए–नुबूव्वत" के सिवा किसी चीज़ से बुझ नहीं सकती थी, वे भी जिनके हमलों का सैलाब मदीने की दीवारों से आ–आकर टकराता था। वे भी थे जो मुसलमानों को जलती हुई रेत पर लिटाकर उनके सीनों पर आग की मोहरे लगाया करते थे।

करूणा सागर हज़रत मुहम्मद (स0अ0) ने उनकी ओर देखा और थोड़े भयावह शैली में पूछाः

"तुमको कुछ मालूम है?" मैं उनसे क्या मामला करने वाला हूं?

यह लोग यद्यपि अत्याचारी थे, क्रूर थे लेकिन स्वभाव ज्ञाता थे, पुकार उठे किः

"आप शरीफ़ भाई हैं और शरीफ़ भाई के बेटे हैं।"

आप (स0अ0) ने कहाः

"तुमपर कुछ आरोप नहीं, जाओ तुम सब आज़ाद हो।"[1]

"जब विजयी अभियान पूर्ण हो गया और सब लोगों को हज़रत मुहम्मद (स0अ0) ने शरण दी, सिवाय नौ व्यक्तियों के, जिनके क़त्ल का आदेश हुआ। चाहे वे काबे के पर्दे के अन्दर मिलें, उनमें कोई वह था जो इस्लाम लाने के बाद विमुख हो गया। किसी ने धोखा देकर किसी मुसलमान की हत्या की थी, किसी ने आप (स0अ0) की निंदा को

1. सीरतुन्नबीः 1/369–370

मनोरंजन का साधन बना लिया था और उसको लोगों में फैलाता था। उनमें अब्दुल्लाह बिन साद बिन अबी सरह भी था जो विमुख हो गया था। इक्रिमा बिन अबूजहल था जो इस्लाम के वर्चस्व व प्रभुत्व को देखकर, नफ़रत के आधार पर और जान गवाने के भय से अपना वतन छोड़कर यमन चला गया था। उसकी पत्नी ने उसकी फ़रारी के बाद हज़रत मुहम्मद (स0अ0) से उसके लिए "अमान" मांगती है। आप (स0अ0) ने यह जानते हुए कि वह इस धरती पर आप (स0अ0) के धुर शत्रु का बेटा है, उसको शरण दी और ख़ुशी व स्वागत से इस तरह उसकी ओर लपके कि चादर भी पवित्र शरीर से हट गई थी।

हज़रत इक्रिमा (रज़ि0) इस्लाम लाए तो हज़रत मुहम्मद (स0अ0) बहुत ख़ुशी हुई। इस्लाम में उनको विशेष स्थान प्राप्त हुआ। विमुखता की जंगों और शाम (सीरिया) के युद्धों में इन्होंने बड़ी सेवाएं दीं।

इनमें हज़रत मुहम्मद (स0अ0) के प्रिय चचा हज़रत हमज़ा (रज़ि0) के हत्यारे (जबीर बिन मुतअिम के ग़ुलाम) वहशी भी थे, जिनका ख़ून आप (स0अ0) ने वैध क़रार दिया था, लेकिन वे इस्लाम लाए और आप (स0अ0) ने उनका इस्लाम स्वीकार कर लिया।

उनमें हिबार बिन असवद भी था, जिसने आप (स0अ0) की बेटी हज़रत ज़ैनब की इ़ज़्ज़त व आबरू पर हमला करने की गुस्ताख़ी की थी। यहां तक कि वे एक चट्टान

पर गिर पड़ी और गर्भपात की घटना सामने आई। उसके बाद वह भाग गया। बाद में उसने इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया। सारा और दो–एक गाने वालियों (जो आप (स0अ0) की निंदा में कहे गए अशआर को गाती थीं) के संबंध में आप (स0अ0) से शरण चाही गई। आप (स0अ0) ने उन दोनों को अमान दी और वे दोनों मुसलमान हो गईं।[1]

अन्तिम असफल प्रयास

जब मक्का फ़तेह हो गया तो उस समय आस–पास की आबादियों ने इस्लाम के विरुद्ध अपना अन्तिम तीर चलाया। हवाज़िन क़बीला कुरैश के बाद नम्बर दो की शक्ति समझा जाता था। कुरैश से उसकी पुरानी शत्रुता थी। जब कुरैश ने हथियार रख दिये तो हवाज़िन ने अपना दायित्व समझा और इस विचार से मुसलमानों के उन्मूलन हेतु निकल खड़े हुए कि जो कुरैश न कर सके वह हम कर दिखाएगें।

हुनैन के रणक्षेत्र में यह युद्ध हुआ। आरम्भ में इस्लामी सेना लड़खड़ाई, इसलिए कि उसमें मक्का विजय के अवसर पर ईमान लाए मुसलमान भी थे और एक तादाद बहुदेववादियों की भी माल–ए–ग़नीमत (परिहार) की उम्मीद में साथ हो ली थी, लेकिन अंततः मुसलमानों की फ़तह हुई और बड़ी संख्या में माल–ए–ग़नीमत हाथ आया।

---

1. जादुल मआदः 1/425, नबी–ए–रहमतः 2/73–74

हुनैन युद्ध में बचे लुटे–पिटे सक़ीफ़ क़बीले के कुछ लोग ताएफ़ में जमा हुए और उन्होंने एक साल का ग़ल्ला आदि जमा कर लिया और क़िलाबन्द होकर युद्ध की तैयारी की। आप (स0अ0) को मालूम हुआ तो आप (स0अ0) ने उनकी नाकेबन्दी का आदेश दिया। कई दिनों तक नाकेबन्दी जारी रही। अंततः आप (स0अ0) ने वापसी का आदेश दिया। मुसलमानों को पराजित करने का यह अन्तिम उपाय भी असफल रहा।

सहाबा (रज़ि0) ने सकीफ़ के लिए बद्दुआ का आग्रह किया तो आप (स0अ0) ने कहाः

"ऐ अल्लाह सक़ीफ़ को सत्यमार्ग पर चला और उनको हमारे पास ले आ।"[1]

सक़ीफ़ के छः हज़ार लोग दास बनाए गए थे, जो जिअराना में सुरक्षित थे। यह वह क़बीला था जिसमें आप (स0अ0) ने दूध पिया था। क़बीले के लोगों ने जब इसका हवाला दिया तो आप (स0अ0) ने कहा कि मैं अब्दुल मुत्तलिब के हिस्से के ग़ुलाम आज़ाद करता हूं, शेष यह सब मुसलमानों का हिस्सा है। जब सहाबा ने सुना तो कहा कि हम हाज़िर हैं। एक ही समय में छः हज़ार ग़ुलाम आज़ाद हो गए और आप (स0अ0) ने इसके अतिरिक्त यह भी किया कि उन्हें कपड़े भी दिये।

---

1. तब्क़ात इब्ने साद, भाग–मग़ाज़ी, पेजः 114–115

गज़वात (जंगों) पर एक दृष्टि

यह अल्लाह के नबी हज़रत मुहम्मद के युद्धों का एक अवलोकन था। मक्का में अत्याचार की भट्टियों में पकाए जाने वाले, विभिन्न प्रकार से सताए जाने वाले, जिन्होंने कभी किसी से बदला नहीं लिया, और सब कुछ सहा और बर्दाश्त किया। फिर मदीना में जिनको चैन न लेने दिया गया। तरह–तरह की साज़िशें की गईं, इन सब अत्याचार के बावजूद भी अल्लाह के रसूल (स0अ0) ने कभी बदला नहीं लिया। सदैव वार्तालाप से ही समस्या को सुलझाने का प्रयास किया। उन अत्याचारियों को समझाने की कोशिशे कीं, चाहे वे मक्का के बहुदेववादी हों या मदीने के यहूदी अथवा वे कपटी जो नेपथ्य में मुसलमानों को हानि पहुंचाने में कोई कसर शेष नहीं रखते थे। आप (स0अ0) ने हुदैबिया संधि में जिस प्रकार इन अत्याचारियों की बात केवल इसलिए मान ली कि रक्तपात न हो, जबकि मुसलमान उस समय एक शक्ति बन चुके थे और मक्का वालों को उनकी ताक़त का अन्दाज़ा भी हो चुका था तथा मुसलमान मुक़ाबले के लिए तैयार थे। केवल आप (स0अ0) के इशारे की प्रतीक्षा में थे, मगर आप (स0अ0) ने समझौते में उनकी सारी बात मान ली और अल्लाह ने दिखाया कि यह संधि जो देखने में नाकामी की एक सूरत दिख रही थी, वास्तव में सफलता की कुंजी साबित हुई और फ़तह का रास्ता बनी।

इस प्रकार मदीने के यहूदियों से आप (स0अ0) ने मदीने आते ही संधि की और उन्हें सारी सुविधांए दी। अपने धर्म पर स्वतन्त्रता के साथ अमल करने की आज्ञा दी लेकिन उन्होंने इसका कोई मान नहीं रखा। अंततः निरन्तर उनकी अपनी वादाख़िलाफ़ी, झूट और फ़रेब के नतीजे में तड़ीपार होना पड़ा।

कपटी जिन्होंने अपने डसने की आदत से मुसलमानों को हर जगह पर डसा था, वे आस्तीन के सांप थे। आप (स0अ0) ने उसके बावजूद हमेशा उनके साथ सद्व्यवहार ही किया। कपटियों (मुनाफ़िक़ीन) के सरदार के साथ आप (स0अ0) का बर्ताव उसकी आख़िरी मिसाल है।

आप (स0अ0) की दस वर्षीय मदीने की ज़िन्दगी में यदि ग़ज़वात (युद्धों) का जाएज़ा लिया जाए तो मालूम हुआ कि जिन ग़ज़वात में सैद्धान्तिक युद्ध हुआ उनकी संख्या सात–आठ से अधिक नहीं है। यह सारी जंगे वे हैं जो आप (स0अ0) पर थोपी गईं। इनके अतिरिक्त बहुत से मुहिमों को भी "ग़ज़वात" या "सराया" के नाम से याद किया जाता है, जिनमें न किसी का ख़ून बहा, न नकसीर फूटी। इस पूरी अवधि में अपने और ग़ैर कुल मिलाकर एक हज़ार के क़रीब लोग मारे गए। विश्व मे युद्धों के इतिहास का जायज़ा शुरू में पेश किया जा चुका है। एक–एक जंग में एक–एक करोड़ लोग मारे गए और लाख–डेढ़ लाख लोगों का जान से हाथ धो बैठना सामान्य बात थी। दुनिया में

युद्ध बन्दियों के साथ क्रूरता और बर्बरता का व्यवहार किया जाता है, यह बताने की आवश्यकता नहीं है। लेकिन आप (स0अ0) ने क़ैदियों के साथ जो सद्व्यवहार किया वह इतिहास का अनोखा उदाहरण है। हुनैन युद्ध में छः हज़ार क़ैदियों को बिना किसी प्राणमूल्य के आज़ाद कर दिया गया, इसके अतिरिक्त उनके कपड़े का प्रबन्ध किया गया। बदर युद्ध के बन्दियों से भी मामूली प्राणमूल्य लिया गया और जिनके पास कुछ नहीं था, बच्चों की शिक्षा को उनके लिए प्राण मूल्य क़रार दिया गया।

संसार का विधान

जगत में जो युद्ध लड़े गये हैं उनमें अति बर्बरता, क्रूरता और दरिन्दगी के वे नमूने नज़र आते हैं कि रोंगटे खड़े हो जाएं। विश्वयुद्ध के अवसर पर बिट्रिश व जर्मन सेनाओं की कार्यशैली से संबंधित स्वयं बिट्रेन ही के एक जनरल ने जो कुछ लिखा है, उसका उदाहरण देखें कि एक फ़ौजी अफ़सर सिपाहियों को सम्बोधित करते हुए कहता हैः "अपनी मानवता व सज्जनता को भुला दो, दिलों को पत्थर बना लो, मृत्यु व जीवन की ओर से गूंगे–बहरे बन जाओ, यह जंग है जंग।"

"मेरा कार्य इस समय यह है कि एक हज़ार प्राणों से अधिक की विचारधारा, पोषण, व्यक्तित्व जल्द से जल्द मुद्दत में बदल कर रख दूं। हस्ततः लड़ाई के लिए ख़ून

की प्रवृत्ति मुझे पैदा करना है और यह प्रोपगन्डा कि ज़हर से दिलों को व्यथित कर देना है। जर्मनों की बर्बरता, उनका ज़हरीली गैस का इस्तेमाल करना, फ्रेंच महिलाओं का बलात्कार करना, नर्स किवल की सरकारी हत्या, यह सारी चीज़े इस दरिंदगी के विकास में हो रही हैं, जो सफलता प्राप्ति के लिए अनिवार्य है। बात–बात पर और अकारण क्रोधित हो जाने की आदत पैदा करनी है कि बिना उसके सकारात्मक परिणाम नहीं निकल सकते। नर्म दिलों और स्वच्छ मस्तिष्क सब पर यह ज़हर उतारना है तथा इसके लिए फ़ौजी गाने तथा फ़ौजी बाजे सब काम में लाए जा रहे हैं। कोमल और धार्मिक रागों की निषेधता है, सिवाय गिरिजाघरों के और वहां भी जंगी सुरों में इजाज़त है। गिरजे तो रक्तपात की प्रवृत्ति पैदा करने में सबसे बढ़े हुए हैं और हमने उनसे पूरा काम भी लिया।"

ब्रिटिश सिपाही से पूरी तरह काम लेने के लिए घृणा का ज़हर उसकी रग–रग में पूरी तरह उतार दिया जाए। हलाक होने वालों की संख्या उसके सामने दर्द व संबंध के लहजे में नहीं बल्कि बेदर्दी के साथ बयान की जाती है। मुझे आशा है कि वह दौर आ जाने वाला है और शीघ्र ही जब सिपाहियों के हृदय में मृत्यु और सख़्त से सख़्त तड़पा देने वाले ज़ख़्मों, गैस की मार झेले शरीर का कोई महत्व ही न रह जाएगा, बल्कि हंस–हंस कर इन चीज़ों ज़िक्र करते रहेंगे और प्रसन्न व निश्चिंत इस पर रहेंगे कि जितना

अपना नुक़सान हुआ है, उससे कहीं अधिक दूसरों के जिस्म चीर–फ़ाड़ चुके हैं। सितम्बर 15 ईसवी तक यह स्थिति हो गई थी कि जो कुछ भी हम कर रहे हैं सब वैध और सही है और जर्मनी जो कुछ कर रहा है सब घृणाजनक है। युद्ध में इसके अतिरिक्त कोई रास्ता नहीं और दोनों पक्ष इसी पर अमल कर रहे हैं।[1]

इन उद्धरणों को पढ़िए और विचार कीजिए कि मक्का विजय के अवसर पर जबकि सामने वे दुश्मन जिन्होंने बाइस वर्ष की अवधि में दरिन्दगी व क्रूरता की सारी सीमाएं लांघ ली थी। उहद युद्ध के अवसर पर आप (स0अ0) के प्रिय चचा के नाक–कान काटे थे। न जाने कितने बेगुनाहों को मारा था। हुदैबिया संधि के अवसर पर उमरा करने से भी रोका था, ऐसे दुश्मनों के सामने एक सहाबी (सहचर) कि ज़बान से निकल गया किः "आप रक्तपात का दिन है।"

आप (स0अ0) को यह भी पसंद न हुआ और आप (स0अ0) ने कहा, नहीं! "आज रहम का दिन है।"

आप (स०अ०) के दिशा–निर्देश

जंगों के अवसर पर आप (स0अ0) सहाबा से मशवरा करते और उनकी राय को बड़ा महत्व देते। कमज़ोरों का विशेष ध्यान रखते। ऐसे मौक़ों पर शोर–शराबा आम बात

1. रहबर–ए–इन्सानियत, लेखक – हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी। पेजः 333–335

है, मगर आप (स0अ0) स्वयं भी अल्लाह की याद में लगे रहते और सहाबा को इसकी ओर ध्यान दिलाते।

महिलाओं और बच्चों पर हाथ उठाने से मना करते। जब भी कोई सैन्य टुकड़ी भेजते तो इलाही भय (तक़वा) अपनाने को कहते और आदेश होता किः "अल्लाह के नाम पर जाओ और अल्लाह का इनकार करने वालों से लड़ो, मगर देखो मुस्ला मत करो। न वादाख़िलाफ़ी करना और न किसी बच्चे को मारना।"[1]

आप (स0अ0) के इसी आदेश का परिणाम था कि हज़रत मुआविया (रज़ि0) ने एक बार किसी क़ौम से संधि की और जिस दिन समझौते की तिथि समाप्त होने वाली थी, उससे एक–आध दिन पहले सीमा पर सेना को लेकर पहुंच गए और जैसे ही संधि की अवधि समाप्त हुई, अचानक आक्रमण कर दिया। दुश्मन असावधान था, आसानी से पूरा देश फ़तह होने लगा। हज़रत अम्र बिन अफ़्सा (रज़ि0) एक सहाबी (सहचर) हैं, वे आए और उन्होंने कहा कि यह तो धोखा है, इस्लाम के सिद्धान्त के विरुद्ध है। हज़रत मुआविया (रज़ि0) ने आदेश दिया कि पूरी सेना वापस बुला ली जाए और माल–ए–ग़नीमत (परिहार) भी वापस कर दिया जाए, इस पर अमल हुआ। इस सद्व्यवहार का यह परिणाम हुआ कि पूरी क़ौम मुसलमान हो गई।[2]

---

1. सही मुस्लिमः 4619
2. तिरमिज़ीः 1676

हज़रत मुहम्मद (स0अ0) हर एक का सम्मान करते और उसके छोटे से काम पर भी माल–ए–ग़नीमत (युद्ध में शत्रुओं द्वारा छोड़ी हुई सम्पत्ति) में शामिल करते। लूट–मार और मुस्ला (लाश को अपमानित करना) से सदैव मना करते और कहते कि जो लूट–मार करे वह हममें से नहीं।[1]

माल–ए–ग़नीमत में ख़यानत को आप (स0अ0) ने बड़ा गुनाह बताया है। केवल उपासना में लगे रहने वालों और युद्ध से अलग–थलग रहने वालों पर भी आप (स0अ0) ने हाथ उठाने से मना किया था। युद्धबन्दियों के साथ भी सामान्यतः बड़ी नर्मी दिखाते। बदर युद्ध के क़ैदियों के साथ जो सद्व्यवहार किया गया, वह जंगों के इतिहास में यादगार है। क़ैदियों में यदि मां और उसकी संतान होती तो अलग करना आप (स0अ0) को सख़्त नापसंद था, वे कहते थे किः "जो व्यक्ति किसी के बच्चे और मां को जुदा करे, अल्लाह उसको और उसके चाहने वालों को क़यामत के दिन अलग कर देगा।"[2]

मक्का विजय के अवसर पर जब मुहाजिरीन (देशत्यागियों) ने अपनी जाएदाद और घरों का सवाल किया, जिन पर मक्का के बहुदेववादियों ने क़ब्ज़ा कर रखा था, तो आप (स0अ0) ने कहा, "तुम उसको अल्लाह के

---

1. मुसनद अहमदः 3/140
2. मुसनद अहमदः 5/413

लिए छोड़ चुके, अल्लाह ने इसका बेहतरीन बदला जन्नत में रखा है, तो तुमने जिसको अल्लाह के लिए छोड़ा उसको लेना तुम्हारे लिए उचित नहीं।"[1]

अन्तिम बात

हज़रत मुहम्मद (स0अ0) ने अपने आमन्त्रण और मज़हबी मुहिम में जो तेइस वर्ष रही, अन्तिम आठ वर्ष की अवधि में जो मुक़ाबले किये, उसमें केवल एक हज़ार लोग मारे गए और इस्लाम पर आरोप लगाने वाले, लोकतन्त्र और आज़ादी के दावे करने के बावजूद अपनी जंगों में लाखों से ज़्यादा इंसानों को मार देते हैं और इसके नतीजे में समुदायों व देशों में बड़ी अफ़रा–तफ़री व बेचैनी का माहौल बना देते हैं। मुसलमानों ने अपने संदेष्टा (रसूल) हज़रत मुहम्मद (स0अ0) के नेतृत्व में केवल आठ साल के मुक़ाबले में पूरे अरब को चमन में परिवर्तित कर दिया।

इस सब के बाद पश्चिमी मीडिया इस्लामी जगत के किसी भाग में दो–चार लोगों के नामालूम हाथों से मारे जाने पर ऐसा वावेला मचाता है कि मानो यूरोप में लाखों इंसानों से मारे जाने से अधिक अत्याचार हुआ है। कोई आतंकी घटना दुनिया में कहीं होती है तो जांच से पूर्व ही तुरन्त कह दिया जाता है कि मुसलमान ने किया होगा। और मुसलमान कौन है? मुसलमान वह है जो अपने नबी

1. बुख़ारीः 7/207

(स0अ0) का मानने वाला और उनके आदेशों पर अपने प्राण न्यौछावर करने वाला। और नबी का व्यक्तित्व वह व्यक्तित्व है जिसने स्वयं दया व हमदर्दी अपने दुश्मनों तक असाधारण रूप से पहुंचाया और अपने मानने वालों को इसके अपनाने की ताकीद की तथा मुसलमानों से सारी कमज़ोरियों के बावजूद बहुत कुछ इसी पर अमल किया। मुसलमानों के बाद की जंगों का अध्ययन कीजिए, यही बात दिखाई देगी जिसकी स्वीकारोक्ति ग़ैर मुस्लिम इतिहासकारों ने भी किया है, और मुसलमानों पर इल्ज़ाम लगाने वाले इस पश्चिम की मीडिया ने इस बात को दबाया और छिपाया कि उनके पश्चिमी देशों में अब भी केवल सियासी स्वार्थ के लिए लाखों का ख़ून आसानी से करा दिया जाता है। एक अरबी शायर ने सच कहा हैः

"यदि उनका एक व्यक्ति भी किसी नामालूम जगह जंगल में मार दिया जाता है तो कहते हैं कि यह बहुत बड़ा अपराध हुआ, जो किसी तरह से क्षमा योग्य नहीं और दूसरों की पूरी–पूरी क़ौम को उसके शांतिपूर्ण होने के बावजूद ख़त्म कर दें तो उस पर आपत्ति जताने पर केवल इतना कहेंगे कि हां! यह समस्या विचारणीय हो सकती है।"[1]

---

1. रहबर–ए–इन्सानियत, लेखक – हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी।